



International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों का शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं का अध्ययन

*¹ नितिन आनन्द एवं ²शिखा भदौरिया

*¹ विभागाध्यक्ष, बी०एड० विभाग, चै० सुधर सिंह एजुकेशनल एकेडिमी, जसवन्तनगर, इटावा, उत्तर प्रदेश, भारत।

²सहायक आचार्य चै० सुधर सिंह एजुकेशनल एकेडिमी, जसवन्तनगर, इटावा, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 6.876

Peer Reviewed Journal

Available online:

www.alladvancejournal.com

Received: 20/Nov/2025

Accepted: 24/Dec/2025

*Corresponding Author

नितिन आनन्द

विभागाध्यक्ष, बी०एड० विभाग चै० सुधर सिंह एजुकेशनल एकेडिमी, जसवन्तनगर, इटावा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

सम्बन्धित शोध पत्र नवीनतम ज्ञान के शिखरों पर ले जाता है जहां उसके अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निष्कर्षों एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहां रक्तियां हैं कहां निष्कर्ष विरोध हैं, कहां अनुसंधान की पुनः आवश्यकता है। जहां वह दूसरे शोधकर्ताओं के अनुसंधान कार्य की जांच एवं मूल्यांकन करता है तो उसे बहुत सी अनुसंधान विधियों, बहुत से तथ्यों, सिद्धान्तों संकल्पनाओं एवं सन्दर्भ ग्रन्थों का ज्ञान होता है जो उसके अनुसंधान में उपयोगी सिद्ध होते हैं। मानव जाति को प्रभावित करने वाले कारकों में सबसे अधिक प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण शिक्षा ही है। मनुष्य को अपने विकास एवं श्रेष्ठ सुख सुविधाओं की आवश्यकता होती है जिसे वह शिक्षा के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। मनुष्य की शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य प्राचीन काल से वर्तमान परिवेश में अभी तक मानव तथा मानव जाति का सर्वांगीण विकास करना माना जाता है। व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण बालक के विकास के लिए दी जाने वाली शिक्षा बालक की आवश्यकताओं के अनुसार दी जाती है।

अतः विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों का शिक्षा में योगदान के प्रति अध्यापकों और छात्र एवं छात्राओं के विचार लगभग समान हैं। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं, छात्रों एवं अध्यापकों तथा छात्राओं एवं अध्यापकों के दृष्टिकोणों में सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्द: विभिन्न, कृत्रिम उपकरणों, शिक्षा, माध्यमिक स्तर, अध्यापकों, छात्र-छात्राओ

प्रस्तावना:

बालक के प्रारम्भिक जीवन में उसका पर्यावरण घर ही होता है क्योंकि यहीं उसकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति होती है जो उसे भविष्य में समाज के उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए समर्थ बनाती है। यहीं वह भाषा सीखता है, उठना-बैठना सीखता है, खाने-पीने का शिष्टाचार सीखता है, पहनना व बातचीत करना सीखता है और एक दूसरे के प्रति शिष्ट व्यवहार करना सीखता है। यह घर या परिवार का पर्यावरण बच्चों को योग्य और होनहार बनाने में सफल नहीं हो पाता है तो बच्चों का समुचित विकास होना असम्भव सा ही है। अतः बालकों की प्रथम व शाश्वत पाठशाला घर ही होता है। यहाँ उसकी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक एवं अन्य आवश्यकतायें पूरी होती हैं। जीवन में लगाव एवं अभाव का अर्थ भी वह यहीं समझता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि घर एक महत्वपूर्ण संस्था है जहाँ व्यक्ति की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

मानव जाति को प्रभावित करने वाले कारकों में सबसे अधिक प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण शिक्षा ही है। मनुष्य को अपने विकास एवं श्रेष्ठ सुख-सुविधाओं की आवश्यकता होती है। जिसे वह शिक्षा के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। मनुष्य की शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य प्राचीन काल से वर्तमान परिवेश में अभी तक मानव तथा मानव जाति का सर्वांगीण विकास करना माना जाता है। व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण बालक के विकास के लिए दी जाने वाली शिक्षा बालक की आवश्यकताओं के अनुसार ही दी जाती है।

शिक्षा किसी समाज में चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला-कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते हैं।

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है अपने व्यापक अर्थ में यह जीवन के आरंभ से मृत्यु तक चलने वाली अर्थात् जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है जो हम लोग हर समय तथा हर स्थान पर प्राप्त करते हैं इस प्रकार यह एक अनवरत और क्रमबद्ध प्रकार से चलने वाली प्रक्रिया है। विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों का शिक्षा में योगदान के प्रति अध्यापकों और छात्र एवं छात्राओं के विचार लगभग समान हैं। यद्यपि शहरों में सौ में नब्बे प्रतिशत लोगों के घरों में केबिल कनेक्शन हैं पर अभी पहुंच गांवों में बहुत कम है। रेडियो व टेपरिकार्डर घर में हैं। शहरों में यह एक व्यवसाय हो गया है। केबिल आपरेटरों ने शहरों को निश्चित क्षेत्रों में बांटकर इसका वितरण अपने-अपने क्षेत्रों में करते हैं और शहरों की अपेक्षा गांवों में इसका प्रभाव न के बराबर है किंतु आगे चलकर कुछ नहीं कहा जा सकता है। यह एक समस्या भी है और लाभकारी आविष्कार भी। यह निर्भर करता है इसके प्रयोग पर क्योंकि इसमें ज्ञानवर्धक और स्वास्थ्यप्रद प्रोग्राम भी आते हैं। ऐसे में शिक्षक छात्रों में अनुशासन की सीख दें और निश्चित समय तक ही कार्यक्रम देखने की सलाह दें और ऐसे कार्यक्रमों को देखने को प्रोत्साहित करें, जिसमें छात्रों को जिज्ञासा, रूचि, सामान्य ज्ञान की बढ़ोतरी हो। शिक्षकों द्वारा दिया गया निर्देशन बहुत अधिक महत्व रखता है। अध्यापकों का यह भी कर्तव्य बन जाता है कि वह स्वयं को नियंत्रित करें और कम कार्यक्रम देखें। और वे कार्यक्रम को देखने को प्रयत्न करें और कम कार्यक्रम देखें। और वे कार्यक्रम को देखने को प्रयत्न करें जिससे बालकों में सर्वांगीण विकास संभव हो।

अभिभावक समय-समय पर मूल्यांकन करें कि खाली समय पर बच्चे कैसे कार्यक्रम देखते हैं और इसमें कितना समय व्यतीत करते हैं। अभिभावकों को उन कार्यक्रमों से परहेज करना चाहिए जो बच्चों पर हानिकारक प्रभाव डालते हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि कुछ वस्तुएं दूसरे राष्ट्रों के लिए तो अच्छी होती है। परंतु हमारे राष्ट्र में उसे बुरा समझा जाता है जैसे कि अमेरिका और यूरोप के देशों में रात-रात तक पार्टी में रहना और मित्रों के साथ मदिरापान करना आपसी व्यवहार में अच्छा माना जाता है पर भारत में यह हर तरह से बुरा माना जाता है। सरकार का भी कर्तव्य है कि वह ऐसे चैनलों के कार्यक्रम को दिखलाये जो स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करते हों। उसे चाहिए कि वह दूरदर्शन के कार्यक्रमों को और अधिक जिज्ञासा पूर्ण, आधुनिक व सरल बनाना चाहिए। जिससे छात्रों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक एवं व्यवहारिक विकास के साथ-साथ भावनात्मक एकता, राष्ट्रीय एकता और अवबोध की बढ़ोतरी हो।

उद्देश्य

- (क) विद्यालयी दूरदर्शन सेवा की सीमा का अध्ययन करना।
- (ख) उन घटकों का अध्ययन करना जो विद्यालयी दूरदर्शन सेवा को प्रभावित करते हैं।
- (ग) अनेक संस्थानों के विद्यालयी दूरदर्शन सेवा में संबंध का अध्ययन।
- (घ) शिक्षकों के दृष्टिकोण का विद्यालयी दूरदर्शन सेवा के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
- (ङ) विषयों के अनुसार उन्हें प्रसारण सेवा में स्थान देना।

शैक्षिक महत्व

1. विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों से छात्रों को नई-नई जानकारीयां प्राप्त होती हैं।
2. विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों से छात्रों को नवीन तकनीकियों की जानकारी होती है।
3. विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों से छात्रों को अपनी शैक्षिक क्रियाएं करने में सहायता मिलती है।
4. विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों से छात्रों को विदेश की संस्कृति, रीति-रिवाज और परंपराओं की जानकारी मिलती है।

5. विभिन्न शैक्षिक चैनलों के कार्यक्रम देखने से छात्रों में उत्साह और आत्मविश्वास की बढ़ोतरी हुई है।
6. विभिन्न कृत्रिम शैक्षिक उपकरणों के कार्यक्रम सुनने से छात्रों में आत्मनिर्भरता, कुछ करने की लालसा की की बढ़ोतरी हुई है।
7. विभिन्न श्रव्य उपकरणों के कार्यक्रम सुनने से छात्रों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से निर्देशन और परामर्श प्राप्त होता है।
8. दूरदर्शन के उचित कार्यक्रम देखकर छात्र अपने अवकाश का सदुपयोग कर सकते हैं।
9. विभिन्न दूरदर्शन व आकाशवाणी के कार्यक्रम देखकर व छात्र अपने अधिकारों और दायित्वों को जानने लगे हैं।
10. दूरदर्शन व आकाशवाणी कार्यक्रम देखकर व सुनकर छात्रों में राष्ट्रीय एकता और अंतराष्ट्रीय अवबोध जैसे गुणों की बढ़ोतरी हुई है।

भावी शोध के लिए सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न उपकरणों द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों के प्रति अध्यापकों व छात्रों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने के उपरांत पाया गया कि-

1. विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों के कार्यक्रम के प्रति हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों के कार्यक्रमों के प्रति शिक्षकों और छात्रों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. विभिन्न रेडियो कार्यक्रमों के प्रति छात्र-छात्राओं के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. विभिन्न उपग्रह चैनल के कार्यक्रमों के प्रति शिक्षकों और शिक्षिकाओं के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

सत्यता की जांच करने पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1. विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों का शिक्षा में योगदान के प्रति छात्र एवं छात्राओं के दृष्टिकोणों में सार्थक अंतर नहीं है।
2. विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों का शिक्षा में योगदान में छात्रों एवं अध्यापकों के दृष्टिकोणों में सार्थक अंतर नहीं है।
3. विभिन्न शैक्षिक कृत्रिम उपकरणों का शिक्षा में योगदान में छात्राओं एवं अध्यापकों के दृष्टिकोणों में सार्थक अंतर नहीं है।

संदर्भ सूची:

1. भटनागर एवं भटनागर-शिक्षा अनुसंधान, लायल बुक डिपो, कॉलेज रोड मेरठ, प्रथम संस्करण।
2. लाल रमन बिहारी-शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धांत।
3. रत्न के0के0-सूचना तंत्र और प्रसारण माध्यम।
4. उत्तम, एम0 सी0-उपग्रह उवाच।
5. पत्र-पत्रिकाएं-इंडिया टुडे, दैनिक जागरण, टी0वी0 रिसीवर, भारत-2006।